३. धार्मिक सौहार्द

भाषा और धर्म में पाई जानेवाली विविधता भारतीय समाज की महत्वपूर्ण विशेषता है । इसी विशेषता को ध्यान में रखकर भारतीय संविधान द्‌वारा सर्वधर्म समभाव सिद्‌धांत को स्वीकारा गया है । मध्यकालीन भारतीय समाज जीवन में भी इसी सिद्‌धांत के आधार पर धार्मिक सौहार्द के प्रयास हुए थे । इन प्रयासों में भक्ति आंदोलन, सिख धर्म और सूफी पंथ का हमारे समाज में विशिष्ट स्थान है । ये विचारधाराएँ भारत के अलग-अलग प्रदेशों में निर्माण हुईं । उन्होंने ईश्वर की भक्ति के साथ-साथ धार्मिक और सांप्रदायिक समरसता पर बल दिया । इस पाठ में हम इस विषय से संबंधित जानकारी प्राप्त करेंगे ।

भारतीय धर्म जीवन में प्रारंभ में कर्मकांड और ब्रह्मज्ञान पर विशेष बल दिया जाता था । मध्यकाल में ये दोनों धाराएँ पीछे रह गईं और भक्तिमार्ग को महत्व प्राप्त हुआ । इस मार्ग में अधिकार को लेकर निरर्थक भेदभाव नहीं था । फलस्वरूप धार्मिक सौहार्द को अधिक बल मिला । भारत के अलग-अलग प्रांतों में स्थानीय परिस्थिति का अनुसरण कर भक्तिमार्ग के अलग-अलग पंथों का उदय हुआ । भक्तिमार्ग ने संस्कृत भाषा के स्थान पर सामान्य लोगों की भाषाओं का अवलंब किया । परिणामत: प्रादेशिक भाषाओं के विकास में इन धार्मिक आंदोलनों का बहुत बड़ा सहयोग प्राप्त हुआ ।

भक्ति आंदोलन : ऐसा माना जाता है कि भक्ति आंदोलन का उद्‌गम दक्षिण भारत में हुआ । इस क्षेत्र में नयन्नार और आलवार भक्ति आंदोलनों का उदय हुआ । नयन्नार शिवभक्त थे तो आलवार विष्णुभक्त थे । शिव और विष्णु एक ही हैं; यह मानकर उनके बीच समन्वय स्थापित करने के प्रयास भी हुए । भगवान विष्णु का आधा हिस्सा और आधा हिस्सा भगवान शिव का दर्शाकर 'हरिहर' के रूप में बड़ी मात्रा में मूर्तियों का निर्माण करवाया गया । इस भक्ति आंदोलन में समाज के सभी वर्गों के लोग सहभागी हुए थे । इस आंदोलन द्‌वारा ईश्वर प्रेम, मानवता, प्राणिमात्र के प्रति करुणा आदि मूल्यों की सीख प्राप्त हुई । दक्षिण भारत में रामानुज और अन्य आचार्यों ने भक्ति आंदोलन की नींव सुदृढ़ की । उन्होंने कहा, ''ईश्वर सभी का है । ईश्वर भेदभाव नहीं करता ।'' उत्तर भारत में भी रामानुज की सीख का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा ।

उत्तर भारत में संत रामानंद ने भक्ति का महत्व प्रतिपादित किया । संत कबीर भक्ति आंदोलन के विख्यात संत थे । उन्होंने तीर्थस्थानों, व्रतों, मूर्तिपूजा को महत्व नहीं दिया । सत्य को ही ईश्वर माना । सभी मानव एक हैं, यह सीख दी । उन्हें जातिभेद, पंथभेद, धर्मभेद मान्य नहीं थे । वे हिंदू-मुस्लिमों के बीच एकता स्थापित करना चाहते थे । उन्होंने हिंदू और मुस्लिम धर्मों के कट्‌टर लोगों को कड़े शब्दों में फटकारा ।

संत कबीर

बंगाल में महाप्रभु चैतन्य ने कृष्णभक्ति का महत्व स्पष्ट किया । उनके उपदेशों के कारण लोग जाति और पंथ के बंधन लांघकर भक्ति आंदोलन में सम्मिलित हुए । महाप्रभु चैतन्य के प्रभाव से शंकरदेव ने असम में कृष्णभक्ति का प्रसार किया । गुजरात में संत नरसी मेहता प्रसिद्‌ध वैष्णव संत हुए । वे परम कोटि के कृष्णभक्त थे । उन्होंने समता का संदेश दिया। उन्हें गुजराती भाषा का आदि कवि माना जाता है ।

संत मीराबाई ने कृष्णभक्ति की महिमा प्रतिपादित की । वे मेवाड़ के राजवंश से संबंधित थीं। राजवंश के सभी सुखों का त्याग कर वे कृष्णभक्ति में तल्लीन हो गईं । उन्होंने गुजराती और राजस्थानी

भाषाओं में भक्ति पदों की रचना कीं । उनके भक्तिगीत भक्ति, सहिष्णुता और मानवता का संदेश देते हैं । संत रोहिदास एक महान संत थे। उन्होंने समता और मानवता का संदेश दिया । संत सेना भी प्रभावी संत थे । हिंदी साहित्य के महाकवि सूरदास ने 'सूरसागर' काव्य की रचना की । कृष्णभक्ति उनके काव्य का विषय है । मुस्लिम संत रसखान द्‌वारा लिखित कृष्णभक्ति की रचनाएँ मधुरता से परिपूर्ण हैं । संत तुलसीदास द्‌वारा लिखित 'रामचरितमानस' ग्रंथ में रामभक्ति की सुंदर अभिव्यक्ति पाई जाती है ।

कर्नाटक में महात्मा बसवेश्वर ने लिंगायत विचारधारा का प्रसार किया । उन्होंने जातिभेद का विरोध किया और श्रमप्रतिष्ठा का महत्त्व समझाया । उनका 'कायकवे कैलास' यह वचन प्रसिद्‌ध है । इस वचन का अर्थ है - श्रम ही कैलाश है । उन्होंने अपने आंदोलन में स्त्रियों को भी सम्मिलित करवाया । 'अनुभवमंटप' सभागृह में धर्म से संबंधित विचार-विमर्श गोष्ठियाँ होती थीं । इनमें सभी जातियों के स्त्री-पुरुष सहभागी होने लगे । उन्होंने अपनी सीख लोकभाषा कन्नड़ में वचन साहित्य के माध्यम से दी । उनके कार्यों का समाज पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा । महात्मा बसवेश्वर के अनुयायियों ने मराठी भाषा में भी रचनाएँ की हैं । उनमें मन्मथ स्वामी का लिखा 'परमरहस्य' ग्रंथ प्रसिद्‌ध है । कर्नाटक में पंप, पुरंदरदास आदि महान संत हुए । उन्होंने कन्नड़ भाषा में असंख्य भक्तिपदों को रचा ।

महात्मा बसवेश्वर

महानुभाव पंथ : तेरहवीं शताब्दी में चक्रधर स्वामी ने महाराष्ट्र में 'महानुभाव' पंथ की स्थापना की । यह पंथ कृष्णभक्ति की सीख देता है । श्रीगोविंद प्रभु चक्रधर स्वामी के गुरु थे । चक्रधर स्वामी के शिष्यों में सभी जातियों के स्त्री-पुरुषों का समावेश था । वे समता के समर्थक थे । उन्होंने संपूर्ण महाराष्ट्र में भ्रमण करके मराठी में उपदेश किया । संस्कृत भाषा के स्थान पर मराठी भाषा को प्राथमिकता दी । फलत: मराठी भाषा का विकास हुआ । मराठी भाषा में विपुल ग्रंथ लिखे गए ।

चक्रधर स्वामी

महाराष्ट्र में इस पंथ का प्रचार-प्रसार प्रमुखत: विदर्भ और मराठवाडा क्षेत्र में हुआ । विदर्भ में ऋद्‌धिपुर नामक स्थान इस पंथ का महत्त्वपूर्ण केंद्र है । यह पंथ पंजाब, अफगानिस्तान जैसे दूरस्थ प्रदेशों में भी पहुँचा था ।

क्या तुम जानते हो ?

महानुभाव पंथ के अनुयायियों द्‌वारा रचित कुछ रचनाएँ इस प्रकार हैं - म्हाइंभट द्‌वारा संपादित चक्रधर की लीलाओं का वर्णन करनेवाला 'लीलाचरित्र' ग्रंथ, आदि मराठी कवयित्री महदंबा का 'धवले', केशोबास द्‌वारा संपादित 'सूत्रपाठ' और 'दृष्टांतपाठ', दामोदर पंडित का 'वच्छाहरण', भास्कर भट्ट बोरीकर का 'शिशुपाल वध' और नरेंद्र का 'रुक्मिणी स्वयंवर' ।

क्या तुम जानते हो ?

महाराष्ट्र में संत एकनाथ द्‌वारा हिंदू-मुसलमान के बीच लिखा संवाद है । यह संवाद धार्मिक सौहार्द की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है । संत शेख महंमद का प्रसिद्‌ध वचन है 'शेख महंमद अविंध । त्याचे हृदयी गोविंद ।।' यह वचन धार्मिक समन्वय का एक उत्तम उदाहरण है ।

गुरु नानक : गुरु नानक सिख धर्म के प्रवर्तक और प्रथम गुरु थे । उनके कार्यों का उल्लेख धार्मिक

गुरु नानक

समन्वय के बहुत बड़े प्रयास के रूप में करना चाहिए । वे हिंदू और मुस्लिम धर्मों के तीर्थस्थानों पर गए । वे मक्का भी गए थे । भक्ति भाव सभी ओर एक जैसा है; यह बात उनके ध्यान में आई । उन्होंने सीख दी कि सबके साथ एक जैसा आचरण करो । हिंदू और मुस्लिमों के बीच एकता स्थापित करने हेतु उन्होंने उपदेश किए । वे शुद्ध आचरण पर बल देते थे ।

गुरु नानक के उपदेशों से लोग प्रभावित हो गए । उनके शिष्यों की संख्या दिन-प्रति-दिन बढ़ती गई । गुरु नानक के अनुयायियों को शिष्य अर्थात 'सिख' कहते हैं । 'गुरु ग्रंथसाहिब' सिखों का पवित्र ग्रंथ है । इस ग्रंथ में स्वयं गुरु नानक, संत नामदेव, संत कबीर आदि संतों की रचनाओं का समावेश है ।

गुरु नानक के पश्चात सिखों के नौ गुरु हुए । गुरु गोविंद सिंह सिखों के दसवें गुरु थे । उनके पश्चात सभी सिख गुरु गोविंद सिंह के आदेश के अनुसार धर्मग्रंथ 'गुरु ग्रंथसाहिब' को ही गुरु मानने लगे ।

सूफी पंथ : इस्लाम में सूफी संप्रदाय एक पंथ है । सूफी संतों की यह श्रद्धा थी कि ईश्वर प्रेममय है । प्रेम और भक्ति के मार्ग पर चलकर ही ईश्वर के पास पहुँचा जा सकता है । सभी प्राणिमात्रों के प्रति प्रेम हो, ईश्वर का स्मरण करें, सादगी से रहें; यह सीख सूफी संतों ने दी । ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, शेख निजामउद्दीन औलिया महान सूफी संत थे । सूफी संतों के उपदेशों के कारण हिंदू-मुस्लिम समाज में सौहार्द स्थापित हुआ । भारतीय संगीत में सूफी संगीत परंपरा का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

संतों के बताए हुए भक्ति मार्ग पर चलते हुए आचरण करना सामान्य लोगों के लिए आसान था । भक्ति आंदोलन में सभी स्त्री-पुरुषों को प्रवेश था । संतों ने अपने विचार लोकभाषा में बताए । वे विचार सामान्य लोगों को अपने लगे । भारतीय संस्कृति के निर्माण और संरचना प्रक्रिया में भक्तिमार्ग का बहुत बड़ा योगदान रहा है ।

स्वाध्याय

१. परस्पर संबंध ढूँढ़कर लिखो :

(१) महात्मा बसवेश्वर : कर्नाटक, संत मीराबाई : ....

(२) रामानंद : उत्तर भारत, महाप्रभु चैतन्य : .....

(३) चक्रधर : .... , शंकरदेव : ....

२. निम्न तालिका पूर्ण करो :

	प्रसारक	ग्रंथ
(१) भक्ति आंदोलन	-------	-------
(२) महानुभाव पंथ	-------	-------
(३) सिख धर्म	-------	-------

३. लेखन करो :

(१) भक्ति आंदोलन में संत कबीर विख्यात संत के रूप में उदित हुए ।

(२) महात्मा बसवेश्वर के कार्यों का समाज पर क्या प्रभाव पड़ा ?

४. निम्न चौखटों में छिपे संतों के नाम ढूँढ़ो ।

गु	रु	गो	विं	द	सिं	ह	स	स
रु	रा	मा	नं	द	सू	र	दा	स
ना	से	त	सं	च	ल	र	ही	पं
न	च	स	क्र	त	द	बी	र	प
क	म	ध	ब	स	वे	श्व	र	क
ब	र	स	पु	अ	प्र	थ	म	बी
म	न्म	थ	स्वा	मी	रा	बा	ई	र

उपक्रम

सूफी संगीत परंपरा की कोई रचना प्राप्त करो और उसे सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रस्तुत करो ।